आधुनिक भारत में बहुजन नायक कांशीराम का योगदान : एक ऐतिहासिक सच

उमेश कुमार*

भारतीय समाज में समय–समय पर क्रांतिकारी, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिलता है। आजाद भारत में बहुजन नायक कांशीराम का योगदान भी एक सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ राजनीतिक परिवर्तन भी कहा जा सकता है। बहुजन शब्द का प्रयोग सबसे पहले बुद्ध ने जन समुदाय के लिए किया 'चरथ भिक्खवेः।' चरिकं बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय लोकानुकम्पाय (अर्थात भिक्खुओं! बहुजन के हित के लिए, बहुजन के सुख के लिए, लोक पर दया करने के लिए विचरण करो)।

बुद्ध के कारवा को आगे बढ़ाते हुए, बाबा साहेब आम्बेडकर का अनुशरण करते हुए आजाद भारत में बहुजन को कैसे आगे बढ़ाया जाये इसके लिए कांशीराम ने सतत् प्रयास किया।

अतः बाबा साहेब आम्बेडकर के बाद स्वतंत्र भारतीय राजनीति में 'बहुजन' की नींव कांशीराम ने बामसेफ. डी॰ एस॰ फोर, पे, बैक टू सोसाइटी के माध्यम से बहुजन समाज पार्टी का गठन बाबा साहेब के जन्म दिन पर 14 अप्रैल 1984 में किया जो 'बहुजनों' के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि कही जा सकती है। उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में एक नहीं तीन–तीन बार सत्ता प्राप्ति कराना भी कांशीराम का ही योगदान था, जो मायावती 'आयरन लेडी' के नाम से स्वतंत्र भारत में पहचान बनाई। बसपा संस्थापक कांशीराम, जिन्हें आदरवश लोग साहब या मान्यवर कहते थे, जीवन पर्यन्त एक अबूझ पहलेी बने रहे। यद्यपि कांशीराम हमेशा 'बहुजनवाद' को आगे बढ़ाते रहे।